लघुजिन पूजा (NENOTEC JIN POOJA)

लघु जिन पूजा (NENOTEC JIN POOJA)

समयाभाव के कारण आज श्रावक लम्बी व संस्कृत की पूजन विधि को देखकर प्रायः पूजन से बचना चाहते है। यह लघु जिन पूजा हम सभी श्रावकों को विशेष रूप से व्यस्त व्यापारी, सर्विस करनेवाले, स्टूडेन्ट्स एवं विदेशों में रहने वालों को, अपने कर्तव्य से न भटकने के लिए लोगों के निवदेन पर आचार्य श्री विद्या सागर जी महाराज के शिष्य पूज्य मुनि श्री सुव्रत सागर जी महाराज ने यह पूजा तैयार की है। यह लघु जिन पूजा पूर्वकृत पूजन विधि का लोप न होकर लघुसार रूप में है। आप इस के माध्यम से पुण्यार्जन करते हुए अपना कल्याण करें। इसको अविनय से बचाये सभी जगह नहीं रखें। इसे डायरी, धार्मिक पुस्तकों में चिपका दें।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य मुनि श्री भावसागर जी महाराज ने जब पूजन का नियम दिया तो यह हमें अच्छी लगी और पुनः प्रकाशन के भाव हुए है।

गुरू चरण चंचरीक

नरेश कुमार जैन
"गोपाल एग्रो इंडस्ट्रीज" लोहार पारा,
राजनांदगांव (छ.ग.) मो. नं. 9300240271

(A1)

विनय-सुपाठ

मन वच तन पावन बना, आया मैं प्रभु - द्वार।
जिन-सूरज जिन-चन्द्र को, वन्दन बारम्बार ॥1॥
कर्मों के हर्त्ता तुम्हीं, मुक्ति रमा के नाथ।
वीर ! तीर संसार के, तुम्हीं त्रिलोकी नाथ ॥2॥
आतम वैभव के धनी, तुम धर्मी गुणवान।
स्वर्ग मोक्ष दाता तुम्हीं, तुम्हीं पूज्य भगवान ॥3॥
भक्तों को तुम तारते, तारण-तरण जहाज।
मुझको भी तारो तुम्हीं, कृपा सिंधु जिनराज ॥4॥
नाथ ! आपका नाम भी, कष्ट विघ्न हर्त्तार।
मुझ पर भी करुणा करो, कर दो अब उद्धार ॥5॥
जन्मादिक व्याधीं हरो, मैं आया हूँ पास।
कर्म बन्ध से मुक्ति दो, देकर कुछ सन्यास ॥6॥
तुमरा वैभव देखकर, दास हुआ संसार।
मैं तो बस विनती करूँ, महिमा अपरम्पार ॥7॥
जल बिन ज्यों मछली हुयी, चाँद बिना ज्यों रात।
वैसे तुम बिन मैं हुआ, बालक ज्यों बिन मात ॥8॥

(1)

नमूँ-नमूँ ओंकार को, वन्दूँ जिन चौबीस।
देवशास्त्र गुरू को नमूँ, हो मंगल आशीष ॥9॥
परमेष्ठी पांचो नमूँ, नमूँ-नमूँ नव-देव।
भूत भविष्यत आज के, वन्दूँ प्रभु जिनदेव ॥10॥
मंगल-मंगल बोल हों, मंगल-मंगल ध्यान।
मंगलमय 'सुव्रत' रहें, हो सबका कल्याण॥11॥

(पुष्पांजलिं) (णमोकारमन्त्र 9 बार)

पूजन पीठिका

ऊँ जय जय जय नमोस्तु! नमोस्तु! नमोस्तु!
णमो अरिहंताणं णमो सिद्धाणं णमो आइरियाणं णमो उवज्झायाणं णमो लाए सव्व साहूणं
ऊँ ह्रीं अनादिमूलमन्त्रेभ्यो नमः (पुष्पांजलि)
चत्तारि मगलं-अरिहंता मंगल, सिद्धा मंगल, साहू मंगलं, केवलिपण्णंत्तो धम्मो मंगलू। चत्तारि लोगुत्तमा-अरिहंता लोगुत्तमो, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि-अरिहते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे

(2)

सरणं पव्वजज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलिपण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ऊँ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलिं)

(मेरी भावनावत)

पहला मंगल अपराजित यह, सभी विघ्न हरने वाला।
णमोकार यह मंत्र सदा ही, पाप नाश करने वाला॥
सुस्थित दुस्थित सभी दशा में, णमोकार जो ध्याते हैं।
पाप नशा भीतर बाहर से, पावन बन सुख पाते हैं॥

(दोहा)

अर्हम् सिद्ध समूह जो, सगुण मुक्ति के धाम।
कर्म रहित परमेश को, शत-शत नम्र प्रणाम॥
श्री जिनवर की वन्दना, हरती विघ्न समूल।
भूत शाकिनी सर्प भय, हरे जहर का शूल॥

(पुष्पांजलिं)

पांचों कलयाणक नमूँ, जिनवाणी जिननाम।
अर्घ चढ़ा परमेश को, सादर करूँ प्रणाम॥
ऊँ ह्रीं पंचकल्याणक-पंचपरमेष्ठी-जिनसहस्त्रनाम-जिनसूत्रेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(3)

पूजा प्रतिज्ञापाठ

तीन लोक के स्वामी गुरुवर, नन्त चतुष्टय के धारी।
ज्ञान - सूर्य सर्वज्ञ हितैषी, समवशरण वैभवधारी॥
श्री अर्हन् की पूजा करने, द्रव्य शुद्ध कर मैं लाया।
ज्ञान हवन में पुण्य होमकर, भाव शुद्ध करने आया॥
ॐ विधियज्ञप्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपामि

स्वस्ति मंगल पाठ

वृषभ अजित शंभव अभिनन्दन, सुमति पद्म सुपार्श्व जिनचन्द्र।
पुष्पदन्त शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य प्रभु विमल अनन्त॥
धर्म शान्ति कुन्थू अर मल्ली, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान्।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों हों, मंगलमय मंगल भगवान्॥

पुष्पांजलिं

परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ

चौषठ-चौषठ ऋद्धियों, परमर्षि-ऋषिराज।
मंगल हम सबका करें, करें हृदय पर राज।
इति परमर्षिस्वस्तिमङ्गलविधानं परिपुष्पांजलिं क्षिपामि

(4)

जिन पूजा

(नवदेवता+देवशास्त्र गुरु पूजा)

(लय-मेरी भावनावत्)

श्री अरहन्त सिद्ध आचारज, उपाध्याय सब साधु महान्।
जय जिन धर्म जिनागम जय जिन-चैत्य तथा चैत्यालय धाम॥
ये नव देवा देव शास्त्र गुरु, पूजित जग में जिन भगवान।
मन मंदिर में इन्हें बिठाकर, हम करते हैं पूजन ध्यान॥

श्री ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरु समूह अत्र अवतर-2 संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ! तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं। (पुष्पांजलिं)

जल तज के रत्नत्रय जल से, अब कर दो पावन हमको।
तुम बिन सक्षम कौन यहाँ पर ? नीर करे अर्पण तुमको॥
देवशास्त्र गुरु नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरुभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत कूप में आग लगी है, उसमें जलते सब प्राणी।
तन मन भव का ताप मिटाती, जिनवर वाणी कल्याणी

(5)

देवशास्त्र गुरू नव देवों के, चरण पूजते जो मन से।
मंजिल उनके चरण चूमती, उनका क्या नाता गम से?
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
जग वैभव की मारामारी, तजने तन्दुल चढ़ा रहे।
भक्ति नाव से मुक्ति गाँव को, पाने माथा झुका रहे।।
देवशास्त्र...
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
जिन सूरज के नाममात्र से, भाग्यकमल खिलकर महके।
काम रोग की व्यथा मिटेतो, ब्रह्मचर्य बगिया महके।।
देवशास्त्र....
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो काम वाण विनाशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
क्षुधा साँप हैं महाभयंकर, आप गरूड़ बन आ जाओ।
ये नैवेद्य आपको अर्पण, क्षुधा जहर प्रभु नशावाओ।।
देवशास्त्र....
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(6)

यथा रात में सूरज गाफिल, तथा मोह में हम अन्धे।
ज्ञान किरण दो हमको भगवन, करें आरती हम बन्दे।।
देवशास्त्र ....
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
जिसके दिल में प्रभु तुम बसते, उसके विधि बन्धन टूटें।
हृदय हमारे आओ भगवन्, धूप चढ़ाकर हम पूजे।।
देवशास्त्र...
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
यहीं सही फल जो उग करके, फसल बढ़ायें घर भर दे।
अगर यहीं फल प्रभु चरणों में, अर्पण हो तो शिवपुर दे।।
देवशास्त्र....
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अष्ट द्रव्य का मिश्रण करके, भाव भक्ति से चढ़ा रहे।
अक्षय अंक मिले रत्नत्रय, यही भावना बना रहे।
देवशास्त्र....

(7)

ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा) नव देवों के साथ में, देव शास्त्र गुरु जाप।
भक्तों के संकट हरे, सुख दे अपने आप।।

(लय–मेरी भावनावत्)

अर्हत् भगवत् घाति कर्म बिन, भव्य जनों को तार रहे।
अष्ट कर्म बिन सिद्ध महन्ता, आतम के शृंगार रहे।।
शिक्षा दीक्षा दण्ड प्रदाता, गुरु आचार्य ज्ञान पथ दें।
शास्त्र पठन करते करवाते, उपाध्याय विद्यारथ दें।।1।।
ज्ञान ध्यान तप में रत रहके, साधु थामते धर्म ध्वजा।
पूज्य पंच परमेष्ठी ये हैं, मिले इन्हीं की शरण मजा।।
जैन धर्म का चक्र निरन्तर, चलता हरता कर्म कथा।
अर्हत्वाणी जिन आगम का, अमृत पीकर हरो व्यथा।।2।।
प्रभु मूरत जिन चैत्य मनोहर, मन को शांति दिलाते हैं।
जिन मंदिर जिन चैत्यालय जो, चित्त भ्रांति नशवाते हैं।।
पूज्य यही नवदेव पूज लो, दसवें की क्यों हो पूजा।
दसवें की जो करते पूजा, उनसा मूर्ख नहीं दूजा।।3।।

(8)

दोष अठारह रहित देव हैं, देवों के जो देव रहे।
हित से सहित शास्त्र हितकर हैं, ग्रंथ रहित गुरुदेव रहे।।
परिषह उपसर्गों में जिनका, मन मेरू सा अचल रहा।
देवशास्त्र गुरु तीन रतन की, पूजन को मन मचल रहा।।4।।
जिन नव देवा, देव शास्त्र गुरु, ये आदर्श हमारे हैं।
इनके पूजक भक्तजनों के, रात दिवस त्यौहारे हैं।।
हरके संकट भरें संपदा, विघ्न कष्ट उलझन हर दें।
इस गंगा में नहा–नहा के, 'सुव्रत' मन पावन कर लें।।5।।
(दोहा) भाव भक्ति से गा लिये, नव देवों के गीत।
देव शास्त्र गुरु नाम में, घटे न अपनी प्रीत।।
ऊँ हीं श्री नवदेवता देवशास्त्र गुरूभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांति शांतिधारा करे, करे शांति चहुँ ओर।
पुष्पांजलि से हो रहे, भक्त कमल के भोर।।

शांतिधारा..... पुष्पांजलिं.....

महा-अर्घ्य (मेरी भावनावत्)

जिन मूरत पाँचों परमेष्ठी, देवशास्त्र गुरु को पूजूँ।
नामादिक नव–देव पूज लूं, तीर्थंकर तीरथ पूजूँ।।

(9)

दया धर्म दशलक्षण पूजूँ, रत्नत्रय मन से पूजूँ।
पूज्य भावनाओं को सादर, महाअर्घ लेकर पूजूँ।।
ऊँ हीं श्री क्लीं ऐ महाऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा...

शांति पाठ (चौपाई)

शांति प्रभु चंदा के जैसे, गुण–धर नेत्र, कमल के जैसे।
पंचम चक्री सोलम जिनवर, आठो प्रातिहार्य मय मनहर।।
शांतिनाथ प्रभु शांति प्रदाता, जगत् पूज्य को हम नत माथा
हमें शांति दो, जगत पूज्य को हम नत माथा।
हमें शांति दो, जगत शांति दो, हम पूजें नित शांति शांति को।।

(दोहा)

पूजक रक्षक राज्य को, राजा देश विदेश।
गुरू मुनियों को शांति दें, परम शांति परमेश।।

(शांतिधारा मेरीभावनावत्)

सभी प्रजा संपन्न सुखी हो, राजा धर्मी सक्षम हो।
योग्य समय पर सम्यक् विधि से, बादल बरसें रिमझिम हो।।
चोरी–मारी रोग व्याधियाँ, जग से सब दुर्भिक्ष टलें।
सुख दाता जिनधर्म चक्र हों, यही भाव दिन रात फलें।।
(दोहा) घातिकर्म हर पा लिये, उज्जवल केवल ज्ञान।।
जगत शांति सुखमय करों, वृषभादिक भगवान।।

(10)

(चन्दनधारा) (अंतिम इष्ट प्रार्थना)

नमूँ चार अनुयोग पढ़ूँ मैं, प्रभु वन्दन सत्संग करूँ।
गुण गाऊँ पर दोष न बोलूँ, सबसे हित मित बात करूँ।।
तव चरणों में मम हिय थित हो, मेरे हिय में तव–चरणा।
जब तक मैं निर्वाण न पाऊँ, यही भावना ये रटना।।
(दोहा) क्षमा करो मम दुख हरो, रत्नत्रय दो नाँव।
वीर मरण मैं कर सकूँ, दो चरणों की छाँव।।

पुष्पांजलिं (नौ बार णमोकार मंत्र)

विसर्जन पाठ (दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम – विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ।।
मंत्रादिक से हीन में, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिए, चरण शरण का दान।।
शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा संपन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य।।
ऊँ हां हीं हूँ हौं हः असिआउसा नमः अर्हदादि परमेष्ठिनः।
पूजा विधिं विसर्जनं करोमि। अपराध क्षमापणं भवतु।।
यः यः यः ।। (नौ बार णमोकार मंत्र)

(11)

पुण्यार्जक - स्व. श्री योगेन्द्र नाथ जैन की स्मृति में श्रीमती अंजली जैन, आयुश जैन एवं उत्कर्ष जैन, अरिहंत सेल्स नेटवर्क, 48/12 नेहरु नगर (प.) भिलाई (छ.ग.), मोबाईल नं. 9981260966, 9826960966